# प्राचीन मध्यप्रदेश में सूर्य पूजा

*आर.पी. सिंह*

रात्रि के गहन अंधकार को अपनी रश्मियों से दूर कर संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य की उपासना वैदिक काल से ही प्रचलित रही है। यहाँ तक कि प्रागैतिहासिक मानव भी गुफाओं की भित्तियों पर सूर्य के प्रतीक को चिन्हित करते थे। इस प्रकार का अंकन सिहनपुर (रायगढ़, छतीसगढ़) की गुफाओं में दर्षित है।[1] वैदिक ऋचाओं में सूर्य को देवताओं का मुख एवं मित्र एवं वरूण का चक्षु भी कहा गया है। चक्षु का सूर्य के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वह मनुष्य के शुभ-अशुभ कार्यो को देखता, मनुष्यों को निर्दोषित घोषित करता और उन्हें निष्पाप भी बनाता है। सूर्य आदित्य और ग्रह के रूप में पूजित थे। यहाँ तक कि स्वास्थ्य से भी सूर्य का स्वाभाविक सम्बन्ध है, जिस पर हम आगे चर्चा करेंगे।

आदिकाल से ही मानव प्राकृतिक शक्तियों द्वारा प्रभावित एवं आतंकित होता रहा है। संभवतः इसीलिए अग्नि, मेघों के अधीश्वर, इन्द्र, वायु, समुद्र के स्वामी वरूण एवं प्राणीजन को प्रकाश द्वारा जीवन दान देने वाले आदित्य की उपासना करना मानव मात्र का परम कर्तव्य हो गया। इन समस्त प्राकृतिक शक्तियों में सूर्य प्रमुख हैं।

अतः उनकी महत्ता अनिवार्य तत्व बन गयी। कालांतर में इन्द्र, अग्नि, वरूण आदि वैदिक देवता गौण होते गये, परन्तु सूर्य पौराणिक त्रिमूर्ति के साथ तादात्म्य स्थापित कर 'हरिहर हिरण्यगर्भ पितामह' की संज्ञा से आविर्भूत हुए। पौराणिक ग्रंथों एवं शिल्पशास्त्रों में पंचायतन पूजा का उल्लेख मिलता है। इनमें विष्णु शिव, शक्ति, गणेश एवं सूर्य की गणना की गई है।[2] यही कारण है कि मध्ययुगीन मंदिर निर्माण की प्रक्रिया में वैष्णव, शैव, शाक्त एवं सौर मंदिरों के निर्माण न केवल उत्तर भारत वरन् दक्षिण भारत तक होते रहे।[3]

ग्रह मण्डल के अधीष्वर के रूप में सूर्य की स्थापना उसके लोकपूजित होने का सबल प्रमाण है। इस रूप में सूर्य का उत्कीर्णन मंदिरों के द्वार उत्तरंग में उत्कीर्ण ग्रहपट्ट में अनिवार्य रूप से हुई है।[4] सूर्य यद्यपि कि वैदिक कालीन देवता है किन्तु उनके प्रचार-प्रसार में विदेशियों का भी पूर्ण सहयोग रहा। सूर्योपासना में पहले पूजा के विषय प्रतीक थे। मानव कृति मूर्तियाँ पीछे व्यवहार में आयी। सूर्य के प्रतीकों में चक्र, वृत्ताकार सुवर्ण पात्र, कमल आदि मुख्य थे।

प्रारम्भ में सूर्य सम्प्रदाय किसी समय पश्चिमी भारत में ही प्रचलित था, किन्तु शीघ्र ही यह पूर्वी भारत तक फैल गया। पूर्वी भारत तक का यह विस्तार बिना मध्य भारत को स्पर्श किये हो ही नहीं सकता था। सूर्य मूर्तिकला पर चर्चा करना हमारा उद्देश्य नहीं है, हमारे चर्चा का विषय सूर्य पूजा है। किन्तु यहाँ हम उस पर हल्का सा दृष्टिपात करना चाहेंगे। सूर्य मूर्तियों के दो सम्प्रदाय विकसित हुए। एक औदीच्य और दूसरी

मध्य भारती-75, जुलाई-दिसम्बर, 2018, ISSN 0974-0066, *pp. 141-145*